हिंदी विभाग
नवोन्मेष
माजुली

सम्पादक मंडली

सम्पादिका : चिन्मयी डेका

सहसम्पादिका : पूजामणि कलिता,
जयश्री डे

मार्गदर्शक : श्री अरविन्द कुमार शर्मा
डॉ. उन्मेषा कोवर

अलंकरण : प्रार्थना, राजेश, सुभागना,
उपासना, श्रुति

सदस्य : बागस्मिता, चिन्मई, रक्षा,
जावेद, निखिल, जिन्तु तथा
बिभाग के सभी विद्यार्थीयों
को धन्यवाद।

सम्पादकीय

जब सृष्टि की पटभूमि और संस्कृति के मार्ग में हाथों से हाथ थामकर एकसाथ चले-चले हैं – 'कृषि और कृष्टि'। कृषि और कृष्टि एक दूसरे का परिपूरक हैं। कृष्टि समाज का आइना है, तो कृषि समाज जीवन का धूरा। यदि एक जीवन निर्वाहक है तो दूसरा जन जीवन का रंगीन छवि दिखलाता है।

कृषि कार्य के बिना देश की शक्ति म्लान पड़ जाता है। पर आज के आधुनिक युग में यांत्रिकता के चलते विज्ञान के नये-नये मशीनों को लाकर पारंपरिक तरीकों को दूर किया जा रहे हैं। किसानों के लिए इनका प्रयोग जितना मददगार है उतना ही तकलीफ दायक भी। एकदिन के काम को एक घन्टे में करने से मजदूरों की मजदूरी कभी शून्य हो जाते हैं। जैसे कि ट्राक्टर के आने के बाद हुआ है। उसके अलावा किसानों को हजारों मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। उदाहरण स्वरूप कुछ महीने पहले की पंजाब के कृषक आंदोलन को देख सकते हैं।

ठीक उसी तरह कृष्टि है समाज का उज्ज्वल नक्षत्र। जिस तरह समस्त सूर्यजगत में सूर्य की रोशनी प्राण-संचार करती है वैसे ही कृष्टि भी सांस्कृतिक पटभूमि में विशेष भूमिका निभाते हैं। कला-कृष्टि के माध्यम से ही एक जाति की सत्ता परिस्फुट हो उठते हैं। कृष्टि जाति के निभृत कोने में रहने वाला आदर्श व अंग है।

जन-जीवन के इन दो सम्पूरकों को कलात्मक रूप देने का प्रयास किया गया है हमारे 'प्राचीर पत्रिका' 'नवोन्मेष' की पहली संख्या में। इस संख्या को सर्वांग सुन्दर बनाने में सहयोग करने वाले विभागीय शिक्षा-गुरु के साथ कर्मनिष्ठा से अपना दायित्व पालन करने वाले प्रत्येक विभागीय सदस्य को इसी के माध्यम से तहे दिल से धन्यवाद।

सम्पादिका
चिन्मयी डेका

जीवन दाता

पेड़ों को काटतें देखा तो,
चिड़िया हुई उदास
बोली चिड़िया पेड़ काटकर
कैसे लोगे साँस?
पेड़ हमारे जीवन दाता
हम हैं उनके दास।
पेड़ों से हम सब जिंदा हैं,
पेड़ नहीं तो लाश।

— प्रार्थना बरुवा

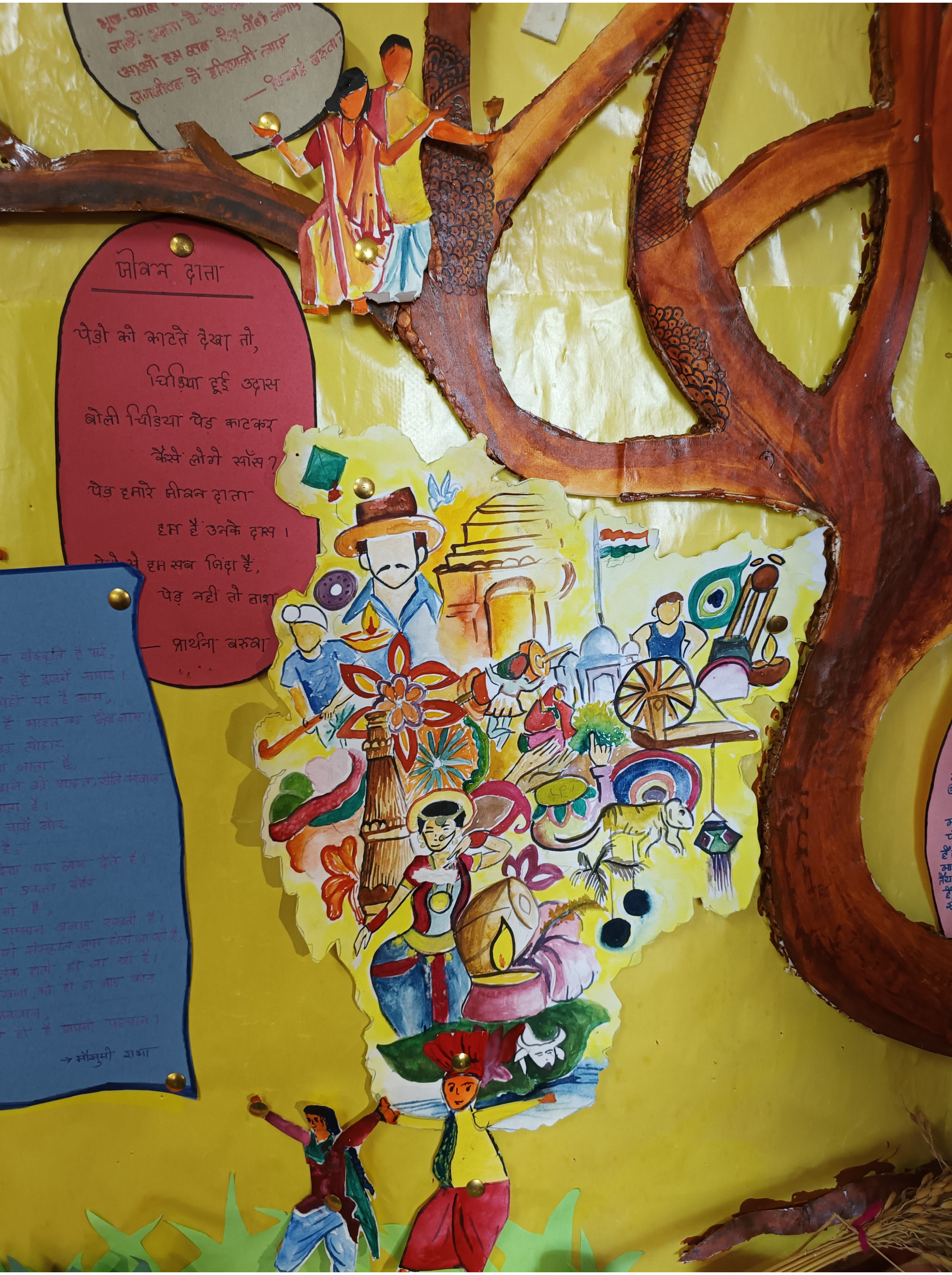
जीवन दाता
पेड़ो को काटते देखा तो,
चिड़िया हुई उदास
बोली चिड़िया पेड़ काटकर
कैसे लोगे साँस?
पेड़ हमारे जीवन दाता
हम हैं उनके दास।
से हम सब जिंदा हैं,
पेड़ नहीं तो नाश
— प्रार्थना बरुवा

कहाँ छुपा के रख दूँ, मैं अपने हिस्से की शराफत
जिधर भी देखता हूँ उधर बेईमान खड़े हैं ॥
क्या खूब तरक्की कर रहा है अब देश देखिये,
खेतों में बिल्डर, सड़क पर किसान खड़े हैं ॥

— मित्रा रॉय

हरियाला

पेड़ लगाओ हरियाली लाओ
भारत में हरियाली लाओ
किसान की खेत और
बातावरण को शुद्ध बनाओ।
जीबन दाता है खेत
सबको भाती है हरियाली
शुद्ध हवा यह हमको देती
फल-फुल भी हमको देती
भूख-प्यास है रोज मिटाती
लाखों जनता के पेट भराती
आओ हम सब पेड़-पौधे लगाएं
जगजीवन में हरियाली लाएं

— चिन्मई बरुवा।

भारतीय संस्कृति

भारत ने बहुत रोचक और प्राचीन संस्कृति है पाई,
क्यूँकी विभिन्न धर्मों की संस्कृति है इसमें समाई।
विविधता में एकता का कथन यहाँ पर है आम,
इसी कारण तो पुरे विश्व में है भारत का ऊँचा नाम।
अपनी संस्कृति में हर धर्म का त्योहार
बड़ी धूम-धाम से मनाया जाता है,
यहाँ सभी धर्मों की भाषा, खाने की आदत, रीति-रिवाज
आदि को सम्मान दिया जाता है।
पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण चारों ओर
हर तरह के लोग रहते है,
वसुधैव कुटुम्बकम का संदेशा यह लोग देते हैं।
हमारी संस्कृति ही हममे एकता और
शिष्टाचार कायम रखती हैं;
भारत माँ का मान-सम्मान बनाए रखती हैं।
परन्तु दिन-ब-दिन हमारी संस्कृति लुप्त होती जा रही है,
क्यूंकी विश्व अब आधुनिक होती ही जा रही है।
हर कोई यह ध्यान रखना, की हो न जाए कोई
अपनी संस्कृति से अनजान,
क्यूंकी अपनी संस्कृति ही है अपनी पहचान।

→ मौसुमी राभा

पहेलियाँ

(क) कठोर भी हूँ और महंगा भी
उल्टा करो तो सफर करु
करवा दू सबमें झगड़ा
मुंह में रख लो तो प्राण हरु

उत्तर:- हीरा

(ख) कौनसी चीज़ बच्चे को
जवान और जवान को
बूढ़ा बना देती है !!

उत्तर:- वक्त

(ग) वो कौन है जिसे डूबता
देख कर भी कोई उसे
बचाने नहीं जाता ?

उत्तर:- सुर्य

(घ) काला घोड़ा सफेद सवारी
एक उतरे तो दूसरे की बारी

उत्तर:- तवा और रोटी

- संग्राहिका:- मुनमी शर्मा

संग्राहक - चिंतामणि बरुआ

असम का कृषि विस्तार

असम के कृषि क्षेत्र में अपार संभावनाएं हैं। विशेष रूप से ब्रह्मपुत्र और बराक नदी की उपस्थिति के कारण। ब्रह्मपुत्र और बराक नदी की घाटी की मिट्टी इतनी उपजाऊ है कि भारतीय उपमहाद्वीप के अधिकांश हिस्सों में उत्पादित कृषि फसलों का उत्पादन संभव है। यहां तक कि मौसम भी काफी अनुकूल है।

असम खाद्य और नकदी दोनों फसलों का उत्पादन करता है। राज्य में उत्पादित प्रमुख खाद्य फसलें धान, मक्का, दालें, आलू, गेहूं आदि हैं, जबकि प्रमुख नकदी फसलें चाय, जूट, तिलहन गन्ना, कपास और तंबाकू हैं।

असम पूरे भारत में फसलों की किस्मों के उत्पादन के लिए शीर्ष पांच सबसे सुविधाजनक राज्यों में से एक है। हालांकि चावल असम की सबसे महत्वपूर्ण और मुख्य फसल है, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में इसकी उत्पादकता में वृद्धि नहीं हुई है, जबकि अन्य फसलों में उत्पादकता और भूमि रकबे दोनों में मामूली वृद्धि देखी गई है।

चाय असम की सबसे महत्वपूर्ण नकदी फसल है और यह राज्य अपनी चाय के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध है। असम की आबादी का एक बड़ा हिस्सा चाय उद्योग से संबंधित माध्यमिक और तृतीयक क्षेत्रों पर निर्भर करता है। विदेशी मुद्रा के आय के स्रोत के रूप में महत्वपूर्ण चाय और पटसन की पैदावार मुख्यतः ब्रह्मपुत्र घाटी में होती है। अन्य फसलों में तिलहन, इसके पत्ते, दालें, खली, सरसों, आलू एवं फल हैं। राज्य के खाद्यान्न की कुल पैदावार खपत से ज्यादा है जबकि तिलहन एवं दालों से यहां की आवश्यकता पूरी नहीं हो पाती।

खुशीयों की बारिश

तुम मुझे प्रश्न कर रही हो—
"सुख की बरसात क्या है ?"
एक किसान के आखों को गौर से देखना
जब खेत की हरियाली उनकी आखों में चमकती है।
मैंने सूखे मिट्टी से समर करते हुए अन्नदाता को देखा है,
मेरे खेतों की हरियाली में आज तुम प्रेम गीत गा रही हो?
कैसे समझाऊ तुम्हें, मैंने इसी खेत में कितनी बार
खुदको मरते हुए देखा है।

— दीपशिखा गायन।

लोकप्रचलित

सादगी से बढ़कर कोई श्रृंगार नहीं होता और विनम्रता से बढ़कर कोई व्यवहार नहीं होता ।

संग्राहक – राजेश कुमार पासवान

कृषि और संस्कृति

भारत एक कृषि प्रधान देश है। देश की अधिकांश जनसंख्या गाँवों में रहती है तथा कृषि सम्बन्धी कार्यों पर निर्भरशील है। भारत की अर्थव्यवस्था कृषि कार्यों पर सबसे ज्यादा निर्भरशील हैं। इसके साथ-साथ भारत सांस्कृतिक रूप से भी ज्यादा सम्प्रीति-सम्पन्न देश है। यहाँ पर विभिन्न संस्कृतियों से जुड़े लोग आपस में मिल-जुल कर अपनी-अपनी संस्कृतियों के रंगों से सभी को रंगीन करते हैं। हम भारतीय लोग प्रकृति के विभिन्न रूपों को भी उत्सव के रूप में खुशी के साथ मनाते हैं।

भारत के विभिन्न स्थान कृषि पर्वों से जड़ित हैं। बैशाख महीने में प्रकृति मनोहर रूप धारण करती है। इस समय असम, पंजाब, हरियाणा आदि जगह के खेतों में हरियाली देखने को मिलती है। कार्तिक मास में खेत में धान की फसल लगाना शुरू करते हैं। माघ माह की संक्रान्ति में भारत के विभिन्न स्थानों पर जो भी फसल तैयार होती है उसके व्यंजन बनाकर भगवान को भोग लगाया जाता है। इसी तरह भारत के विभिन्न स्थानों में कृषि के साथ विभिन्न संस्कृति जुड़ा हुआ है।

—पूजामणि कलिता।

कृषीवलः

नवपाषाण काल से चला आ रहा है,
इन किसानों में हमारा भार।
प्रभात में उठ, प्रणाम कर जननी,
जाते हल चलाने,
न रखे मौसम का ख्याल,
ग्रीष्म, शरद, वर्षा में,
कम नहीं होता उनका काम।
पशु-पक्षी हैं उनके मित्र,
सहायक बनते वह हर-हाल।
हरी-भरी है यह सुखद-जीवन,
जो है उनकी सांसों का तार।
खेत की सुनहरी बालीयों में,
अवलोकन है उनकी श्रम-सिकर का फल।
देख-झूमे, नाचे हर गीत।
बैसाखी, ओणम, पोंगल, आदि कृषि की,
पर्व शुभ मोहरत सारी।
समय का चक्र घूमा,
किसानों पर भार अब ज्यादा बढ़ा,
काल की यह आंधी आई,
शोषण की यह आंधी आई!
ऋण में वे दबे हर-पल।
वह सुनहरी किरणे,
लापता हो चली।
सरकार के अंधे गुलाम,
प्रहार-पर-प्रहार किए चले,
अन्न-दाता ने ना हार मानी।
जनंक्र शुरु हो गई,
इन राक्षसों से मुक्त होने का,
उनकी अपनी किरणों को वापस लाने की।
आंधी अब थोड़ी रुकी थी,
क्या करेंगे उन अंधे गुलाम का
जो पागल-पन में मारे थे,
अंध समय तक, चैन की सांस उन्हें न ली।
हर वर्ष आता है इनका शुभ काल,
पर कभी न आया,
उनकी सुनहरी जीवन का वह गीत।

— उपासना भगवती

माजुली

ब्रह्मपुत्र के गोद में बसा है जो
नदी द्वीप माजुली है वो।

शान है वो देश की
जान है वो असम की
आखिर सबसे बड़ा नदी द्वीप है वह संसार की।

हो जानना अगर इतिहास तो
जाए दक्षिणपात सत्र में
अकसर दीवाने प्रकृति के खो जाते हैं
इनकी अनोखी खूबसूरती में।

प्रकृति और प्रेम का सम्मिश्रण है यहाँ
बरसात में ऐसा नजारा है यहाँ
जो आए कभी घूमने यहाँ
लुफ्त जरूर उठाए नौका-विहार का यहाँ।

अनेकता में एकता की मनमोहक मिसाल है
मिसिंग, देउरी, अहोम, सोनोवाल, कछारी;
विभिन्न संस्कृति का वास ही इस भूमि की पहचान है॥

-जयश्री डे

मैंने उसको (किसान)

मैंने उसको
जब जब देखा

लोहा देखा
लोहा जैसे
तपते देखा
गलते देखा
ढलते देखा
मैंने उसको
गोली जैसा चलते देखा।

— राजेश कुमार पासवान

दिल की बातें

सभी को इस जमाने में सब कुछ हासिल नहीं होता
नदी की हर लहर को तो सदा साहिल नहीं मिलता
ये दिलवालों की दुनिया है अजब है दास्ता इसकी
कोई दिल से नहीं मिलता, किसी से दिल नहीं मिलता

प्यार की समझ नहीं थी, हो गया,
दिल संभाल कर रखा था, खो गया
किस्सा किसी और का नहीं, ये आपबीती है,
हार फूलों का था, मुरझा गया ।

— ध्रुव राम बसुमतारी

प्रहार-पर-प्रहार किए चले,
अन्न-दाता ने ना हार मानी।
जंग शुरू हो गई,
इन राक्षसों से मुक्त होने का,
अपनी अपनी किरणों को वापस लाने की।
आंधी अब थोड़ी रुकी थी,
पर कौन उन अंधे गुलाम का
जो पागल-पन में मारे थे,
अध समय तक, चैन की सांस ले न ली।
हर वर्ष आता है इनका शुभ काल,
पर कभी न आया,
उनकी सुनहरी जीवन का वह गीत।
— उपासना भगावती
प्रकृति और प्रेम का सम्मिश्रण है यहाँ
बरसात में ऐसा नजारा है यहाँ
जो आए कभी घूमने यहाँ
लुफ्त जरूर उठाए नौका-विहार का यहाँ,
अनेकता में एकता की मनमोहक मिसाल है
मिसिंग, देउरी, अहोम, सोनोवाल, कछारी;
विभिन्न संस्कृति का वास ही इस भूमि की पहचान है।
-जयश्री डे

उद्घाटनकर्ता के कलम से

[illegible]

२३/५/२०२२